"स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल-किला
(दिल्ली) पर ध्वजारोहण भाषण"

तिथि : 15.8.1956.

बहनो और भाइयो, नौजवानों और बच्चो, हमवतनों :

जयहिन्द !

आपको और हमको आज ये नवीं सालगिरह आज़ाद हिन्द की मुबारक हो । नौ बरस हुए दुनिया में एक नया सितारा निकला आज़ाद हिन्द का । नया था, और पुराना और बहुत बरसों में वो ढला था । लोगों की कुर्बानी और मेहनत और पसीने और खून से ढला था । और उसका एक नया रंग था; नयी पोषाक जो कि उसने इस ज़माने में गांधी जी से ली थी । वो नयी पोषाक थी, और उसकी एक नयी चमक थी, एक नया ढंग था, क्योंकि आपको याद होगा कि इस जमाने की दो पुश्तों की आज़ादी की जंग किस तरह से हम लड़े थे ? हम लड़े हिम्मत से, लड़े बहादुरी से लड़े, लाखों आदमी - करोड़ों आदमी लड़े । लेकिन शान से लड़े; और शराफत से लड़े, और हाथ नहीं दूसरे पर उठाया । दुश्मन से लड़े और दुश्मन को दोस्त बनाया । इस तरह से एक नया ढंग हमने सामने रखा । हमने क्या, गांधी जी ने रखा, हम तो एक कमजोर उनके सिपाही थे । इस तरह से ये हिन्दुस्तान का मुल्क, और यहां के करोड़ों आदमी ढले है, कुर्बानी दे के और और तरह तरह की आग से ।

और फिर उसका नतीजा हुआ कि हम आज़ाद हुए, और

हमारी आज़ादी की चमक और मुल्कों में भी पहुंची । क्यों ? इसलिए नहीं कि हम एक बड़े भारी लम्बे चौड़े मुल्क हैं इसलिए नहीं कि यहां पर पैंतीस-सैंतीस करोड़ आदमी रहते थे, लेकिन इसलिए कि एक नया तरीका उन्होंने देखा - नया ढंग देखा बड़े काम करने का, जंग तक लड़ने का, शराफ़त से, बाअमन तरीकों से, शांति से, और दुश्मनी को भी दोस्ती बनाने के तरीके दिखाये गये ।

मैं आपको यह याद दिलाता हूं कि असली शान हिन्दुस्तान की यही रही थी और ये इसका असर दुनियां पे हुआ । मैं आपको याद दिलाता हूं कि मालूम होता है कि आजकल के जमाने के नौजवान भूल गये इस सबक को, जिस सबक ने हिन्दुस्तान को आज़ाद किया, जिस सबक ने हिन्दुस्तान को दुनियां में प्रसिद्ध और मशहूर किया, जिस सबक ने हमारा सिर ऊंचा किया और कुछ हमारी आंखों में उससे कुछ ग़रूर भी आ गया । दुनियां के मैदान में कुछ थोड़ा सा हमने भी खिदमत कर के दिखाई । थोड़ी सी हमने भी बड़े-बड़े मसलों में हल करने में कुछ हमारा हाथ भी था । और इस वक़्त जब कि फिर से दुनियां में कुछ दूर से लड़ाई के ढोल बजते नज़र आते हैं या तैयारियां उसकी, फिर से कुछ आंखें लोगों की हमारे मुल्क की तरफ जाती हैं । क्यों ? इसलिए नहीं कि यहां लम्बी-चौड़ी फौजें हैं, इसलिए नहीं कि हम जा के कोई धमकी से काम लें, बल्कि इसलिए कि कुछ खिदमत करना हमने सीखा, इसलिए कि कुछ दोस्ती करना और कराना हमने सीखा, इसलिए कि जहां लड़ाई है जहां, वहां हमने अमन कराने में मदद की, इसलिए कि जहां गांठें हैं, उनको खोलने में हमने कुछ किया । ये तो हमारा नाम है दुनियां में -- । आजकल तो फिर से निहायत ख़तरे के सामने हैं दुनियां । फिर से हमें पुराना सबक अपना याद रखना है, अपने को संभालना है, दुनियां की ख़िदमत

करनी है और अपनी खिदमत करनी है ।

हमने आपने सुना है, हिन्दुस्तान से दो लब्ज निकले - आज नहीं हजारों बरस हुए - लेकिन इन जमाने में उन्होंने एक नये माने पकड़े और वो दुनियां में फैले । "पंचशील" नाम है उनका । किस तरह से मुल्कों में आपस में बरताव हो, एक दूसरे का नाता और रिश्ता क्या हो ? और पीछे पुरानी बातें हैं, और नई बातें है और ये विचार हल्के-हल्के फैले हैं, और बहुत सारे मुल्कों ने उनको तसलीम किया, क्योंकि आज-कल की दुनियां में कोई चारा नहीं सिर्फ दो रास्ते हैं--एक लड़ाई का, और तबाही का, और दूसरा अमन का, और पंचशील का । और कोई तीसरा रास्ता नहीं है । ये बात दुनियां हल्के-हल्के समझने लगी ।

और अब इस वक्त जो एक खतरनाक मौका आया है फिर से दुनियां के इतिहास में, जब जो कि फिर इस अगस्त के महीने में, जिस महीने में भली बातें भी हुई हैं और बुरी बातें भी हुई हैं, अजीब महीना है ये, फिर से खतरा है । याद है आपको कि हम 15 अगस्त को यहां मिलते हैं अपनी आज़ादी को मनाने 15 अगस्त को हम मिलते हैं कि एक बड़ा साम्राज्य था, शहन-शाहनियत थी यहां, एक हिन्दुस्तान में सैकड़ों बरस से, उसके उस सिलसिले को खत्म हुआ । और एक नया जमाना शुरू हुआ, उसको मनाने । इसी अगस्त में दो जबरदस्त जंग शुरू हुए थे - दो दुनियां के जंग, सन् 14 की और सन् 39 के । दोनों अगस्त में शुरू हुई महीने में । इसी अगस्त में, और इसी 15 अगस्त के दिन ये बड़ी लड़ाई खत्म हुई थी, जब जापानी कौम ने हथियार रखे थे । अजीब महीना है ये अगस्त का । खतरे से भरा और उसी के साथ अच्छी बातें भी हुई । इसलिए हमें आगाह होना है । खतरे से तो भरी दुनियां है आजकल, क्योंकि ये दुनियां एटम बम, और हाइड्रोजन बम की दुनियां है । तो इसमें गफलत

से काम नहीं चलता और अपनी जिम्मेदारियां भूल जाने से काम नहीं चलता और उस सबक को जो गांधी जी ने सिखाया था, भूल जाने से काम नहीं चलता । और अगर हम भूल गये तो तबाही हमारे सामने है । मैं उम्मीद करता हूं कि इस वक्त जो दुनियां के सामने इस स्वेज-कैनाल के मामले में एक बड़े अन्देशे पैदा हुए हैं, जिसके लिए कल लण्दन में एक सम्मेलन-एक कांफ्रेन्स होने वाली है । मैं उम्मीद करता हूं कि कोई न कोई रास्ते निकलेंगे अमन से इस बात को तय करने के । हमारी दोस्ती मिश्र से खास तौर से इंग्लैण्ड से, दोनों से हमारी दोस्ती और इसलिए कभी-कभी खिदमत करने के मौके हमें मिलते हैं, दोस्ती के ज़रिये से - धमकी के ज़रिए से नहीं । धमकाएं हम किस को ? तो मैं उम्मीद करता हूं कि इस मामले में, मैं वहां जो लोग मिल रहे हैं और जो हमारे मिश्र के दोस्त हैं, उनके सलाह मशविरे से कोई न कोई रास्ता निकलेगा, जिसमें जो हरेक मुल्क की शान रहे और दोस्ती रहे । क्योंकि वो ही फैसले अच्छे होते हैं जिसमें कोई एक दूसरे को नीचा नहीं दिखाता । अगर आप नीचा दिखाएं, तो आप एक दूसरी लड़ाई की जड़ बोते हैं - अदावत की जड़ । लेकिन अगर दोस्ती से कोई मसला हल हो तो पक्की तौर से होता है ।

याद है आपको किस तरह से ये सैकड़ों बरस पुराना मसला हिन्दुस्तान की गुलामी और हिन्दुस्तान की आज़ादी का हल हुआ । आखिर में हल हुआ ये बावजूद लड़ाईयों के, बावजूद पहले जुल्म के, सब बातों के । आखिर में ये हल हुआ दोस्ती से, सहयोग से और इसका नतीजा यह हुआ - समझौते से । अगर वो दबाने की हमें और कोशिश करते, यकीनन नक्शा बदलता, आज़ाद हम होते ज़रूर, लेकिन वो आज़ादी में फिर

काफी रंजिश रहती, और दिनों तक वो रंजिश हमारा पीछा करती । इसलिए मसलों को हल करने का तरीका वो ही है, जिससे किसी दूसरे को हम नीचा न दिखाएं, दूसरे की भी इज़्ज़त का ख्याल रखें, दूसरे के भी हकूक का ख्याल रखें और उसूल पे चलें । तो मैं उम्मीद करता हूं कि ये मिश्र - ये स्वेज़ कैनाल का मसला इसी तरह से हल होगा । इस दफे नहीं हल हो लण्दन में, तो दूसरी कोशिश से हल हो; तीसरी से हल हो लेकिन एक बात साफ होनी चाहिए कि हम किसी सूरत से उसको या किसी और मसले को फौजी ताकत से या धमकी से; हल नहीं करेंगे । और अगर, अगर इस बात की कोशिश हुई -- गलती से - कि फौजी ताकत और धमकी से हो, तो उसका नतीजा बुरा होगा । वो मसला हल नहीं होगा; बल्कि फिर आग लग सकती है, जो आग दुनियां में फैले ।

पंचशील का मैंने आपसे चर्चा किया । जो लब्ज हिन्दुस्तान के - हमारी ज़बान के, हमारी भाषा से निकल के दुनियां में फैले हैं । लेकिन जब मैं अपने मुल्क की तरफ देखता हूँ तो दुनियां में तो हमने अच्छे उसूल रक्खे, कहां तक उन मसलों को हम अपने घर में समझें, अपने दिल से समझें, अपने दिमाग से समझें पिछले चन्द महीनों में 6-7-8 महीनों में इस मुल्क में अजीब हमने तस्वीरें देखीं । अजीब नज़ारे थे । अकसर लड़ाई झगड़े भाई-भाई के । दुश्मन का हमने मुकाबला किया और उसको दोस्त बनाया और फिर हम में इतना सब्र नहीं, और समझ नहीं कि भाई-भाई कैसे मसले हल करें ? क्या बात है ? क्या वो ज़माना गुजर गया जो कि गांधी का ज़माना और जो उन्होंने हिन्दुस्तान की कौम को ढाला था ? वो सिर्फ हमारी उम्र के लोग ढले, और आज कल के नये लोग है उनमें कोई रोकथाम नहीं है - न दिमाग की, न जिस्म की, न समझ की । मामला क्या

है ? मैं चाहता हूँ आप सोचें इस बात को । हमारे नौजवान है, नौजवान हैं; सड़कों पर निकलते हैं, मारपीट होती है, हमले होते हैं । इसी तरह से हिम्मत दिखाते हैं अपने भाई को मार के । हमने अपने ज़माने में बन्दूक और तोप का सामना किया, दुश्मन का सामना किया, साम्राज्य का किया बगैर हाथ उठाये, बगैर उफ किये । आखिर मामला क्या है ? आजकल के नौजवान किस साँचे में ढले हैं । दूसरा कोई साँचा है ? जिस साँचे ने हिन्दुस्तान को आज़ाद किया, जिस साँचे ने हिन्दुस्तान का नाम दुनियाँ में फैलाया, क्या वहे खतम हो गया साँचा ? अब कोई दूसरा है ? आप समझें । मेरी उम्र ज्यादा हुई । हम सब लोग पुराने खादिम इस मुल्क के, और आपके । हमारे ज़माने हल्के-हल्के खतम होते हैं । लेकिन हमारे जमाने में हमने भी कुछ कर के दिखाया, कुछ खिदमत की, हिन्दुस्तान की और खास कर जिस तरीके से हमने किया, वो एक तरीका हमने कुछ सीख लिया था गांधी जी के कदमों पर बैठ कर और गरूर हमें उस तरीके का था । ये उसका नाम दुनियाँ में हुआ । और बड़े कामों को छोड़िए अपने घर के अन्दर के कामों में, छोटे कामों में, खास कर के सड़कों पर लोग निकलें, जलायें, मारपीट करें और एक तहलका मचाएं । किधर हिन्दुस्तान जा रहा है ? आपको हमें सोचना है ।

एक सवाल उठा । आप जानते हैं कि हमारे मुल्क के सूबों का, प्रदेशों का, के हदूद क्या हों ? एक उठा सवाल इस सवाल से कोई बड़ी बड़ा - कोई पालिटीकल, राजनीतिक, सियासी बड़ा सवाल नहीं है । न कोई इक्तिसादी सवाल है - आर्थिक । चाहे हद इधर हो या उधर हो । हां मैंने माना, जज़्बाती सवाल हैं । मैंने माना कि इसमें लोगों को दिलचस्पी है, जोश है । ठीक है और जज़्बे की कदर करनी चाहिए । लेकिन इस तरह से हम अपने मुल्क, इस सवाल के हल करने के

लिए हम एक दूसरे पर हाथ चलाएं, जलाएं, झगड़ा करें । सरकारी इमारत मेरी जायदाद है कि मुझे आप कोई नुक्सान पहुंचाएं; या किसी अफ़सर की । मुल्क की जायदाद है, मुल्क, मुल्क को तबाह करने की कोशिश है । और आखिर में यहां तक नये ढंग निकले हैं कि जो पार्लियामेंट फैसला करे - क्या चीज़ है हमारी लोक-सभा ? हिन्दुस्तान के चुने हुए लोग सारे मुल्क से आते हैं । हिन्दुस्तान के नुमाइन्दे हैं, हिन्दुस्तान की शान है, हिन्दुस्तान की निशानी हैं । अब वहां जो कोई फैसला हो, वो हिन्दुस्तान का कानून है; और हिन्दुस्तान के लोग नहीं, दुनियां को उसको तस्लीम करना पड़ता है, ये हमारी पार्लियामेंट है, अब वहां एक चीज़ लोक-सभा में स्वीकार हो, और उसके खिलाफ बलवे हों और पुलिस वालों के ऊपर मुकाबले हों, या सरकारी इमारतें जलाई जायें । ये कोई हिम्मत की निशानी है, समझ की निशानी है? मैं तो चाहता हूं आप गौर करें, और मैं चाहता हूं हिन्दुस्तान के जितने दल हैं वो गौर करें इस मसले पर, क्योंकि हिन्दुस्तान में हर बड़े मुल्क में बहुत सारी रायें होती हैं । ठीक है, होनी चाहिये । एक रास्ता आगे बढ़ने का नहीं होता, दस रास्ते होते हैं, एक रास्ता सोचने का नहीं होता, पचासों होते हैं । और हम चाहते हैं दरवाजे सब सोचने के सब खुले हों, ख्याल के, खुले हों ताकि उस बहस में हम - असली रास्ते को चुने और उस पे चलें । लेकिन बहस एक चीज़ है और हाथा-पाई दूसरी है, लड़ाई झगड़ा दूसरा है । और अगर कोई दल हिन्दुस्तान में लड़ाई झगड़े की तरफ लोगों की तवज्जह दिलाता है, तब वो हिन्दुस्तान का वफादार नहीं है । तब वो उस बुनियाद को ज़ड़ को खोदता है जिस के ऊपर हिन्दुस्तान की आज़ादी कायम है । इसलिए हर शख़्स को, हर दल को इस बात पर गौर करना है, इसका बात को समझना है कि हम किधर ले जाते हैं ।

कुछ दिन में चुनाव आते हैं । छः-सात महीने में आठ महीने में चुनाव आएँगे । हरेक को हक है, हरेक को हक है कि अपनी राय दे । हरेक दल को हक है कि वो अपनी तरफ लोगों को झुकाएँ; अपनी बहस से । आपको सब को हक है और मुबारक हो आपको वो हक अगर आपको जो आजकल की हुकूमत पसन्द नहीं है दूसरी कीजिए । मैं खुश होऊँगा । और जो कुछ खिदमत मैं कर सकूँगा मैं करूँगा । हम सब होंगे । लेकिन, लेकिन ये तरीके कि हम कसरत राय से, ये जमहूरी तरीकों से बातों को फैसल न करें, बल्कि चौराहों पर जा कर एक दूसरे को मार-पीट कर के । इससे जमहूरियत से और डैमोक्रेसी से, और प्रजातंत्र से क्या सम्बन्ध गौर करने की बातें हैं ? किधर हिन्दुस्तान जाता है ? क्योंकि वो जो जिस साँचे में हम ढले थे, वो साँचा, क्या वो कमज़ोर पड़ गया ? आजकल के नौजवानों में औरों में क्या बात है ? हरेक इंसान किसी न किसी सभ्यता के, किसी न किसी तहजीब और संस्कृत के साँचे में ढलते हैं, कौमें ढलती हैं, हम किस साँचे के हैं ? अगर कहा जाय कि हम पुराने साँचे के हैं तो ठीक है कि आखिर हमारे रगो-रेशे और खून में सैकड़ों पुश्ते हैं हिन्दुस्तान की । और उसका असर है । न कोई हम से ले सकता है, न उसे हम भूल सकते हैं । लेकिन हम आजकल आज़ाद हिन्दुस्तान के साँचे के बने हुए हैं, लेकिन वह लोग कहाँ है, जो न पुराने साँचे के, न नये साँचे के, किसी साँचे के नहीं -- सिवाय हुल्लड़बाजी के साँचे के । आप सोचें इस तरह से हिन्दुस्तान - यों भी हिन्दुस्तान के सामने बड़े-बड़े मैदान खुले हुए हैं । पंचवर्षीय योजना, और फाईव ईयर प्लान जबर्दस्त चीज़ है, बड़े बोझे हैं, एक मुकाबला दुनिया में है सख्त अगले पाँच दस बरस का हमारे सामने, जिसमें सारी ताकत हमें डालनी होगी, और इस मुकाबले में हम खर्च करने अपनी ताकत । और बहस इसलिए कि एक दो सूबों में इंतजामी सरहद

इधर हो या उधर हो । कोई हिन्दुस्तान के बाहर तो नहीं जाता । तो ये ख्याल करने की बात है । और मैं यह चाहता हूं कि सारे हिन्दुस्तान के लोग और खास कर हमारे नौजवान इस बात पर गौर करें, सोचें समझें कि कहां वो बहक के जा रहे हैं । सोचें-समझें कि पंचशील जिसका नाम हमने दुनियां में दिया, और दुनियां में फैलाया उस पर हम भी अमल करते हैं कि नहीं, अपने मुल्क में ? पंचशील के माने एक मुल्क दूसरे मुल्क के साथ चले, दोस्ती करे और झगड़ा-फसाद न करें । मुल्कों का कहां सवाल जब पड़ौसी एक दूसरे से दोस्ती न करते हों । ये ख्याल करने की बात है, और जहां तक जहां तक ये झगड़े फसादहोते हैं यदि आप समझ सकते हैं कि इस तरह से कोई फैसला करना नामुमकिन है और जहां तक हमारी गवर्नमेंट का ताल्लुक है; आपकी खादिम है । जब हिन्दुस्तान के लोग चाहे अलग करना, अलग होगी वो । लेकिन इस तरह की बातों से, इस किस्म की धमकियों से तो वो राय नहीं कायम करेगी । और न करती है; और न करेगी और जो लोक-सभा और पार्लियामेन्ट का हुक्म है, उसका अमल होगा; क्योंकि वो कानून मुल्क का होगा और इस तरह से वो बदलेगा नहीं । चुनांचे, हरेक को समझ लेना चाहिये कि लोक-सभा का फैसला हो हुआ है इस मामले में वो स्टेट्स रिऑर्गनाईजेशन बिल में वो पत्थर की लकीर है, और वो नहीं उससे हट सकती चाहे जो कुछ हो जाये । सीधी बात ये है । मैं जहां तक कहता था वो बात शायद कम हो । मैं, आप मुझे इज़्जत बख्शें, मुझे प्रधानमंत्री बनायें, आपने इज़्जत बख्शी, लम्बी-चौड़ी बातें मैं भी कह देता हूं । लेकिन आखिर में इंसान कोई और कहे या मेरी गवर्नमेन्ट भी कहे कोई बात है गवर्नमेन्ट । लेकिन जब पार्लियामेन्ट कोई बात कहती है तो न मेरी है, न उनकी है, न आपकी है वो हिन्दुस्तान की बात है और हिन्दुस्तान की बात के सामने

हरेक को झुकना है । इसलिए कि वो जो फैसले हुए हैं, लोक-सभा की तरफ से और जब राज्य-सभा में जाएगा । ये फैसले पक्के हैं और ये बात हरेक को समझनी है और उसके खिलाफ आइन्दा हमेशा तरीके हैं, किसी फैसले को बदलने के, जाब्ते से वो दूसरी बात है । लेकिन इस वक्त समझा जाये कि बलवे कर के वो बदले जाएँगे ये तो अपने को धोखा देना है । मुल्क की खिदमत नहीं; बल्कि मुल्क के खिलाफ काम करना है ।

इसलिए आज के दिन, इस 15 अगस्त को, नौ बरस बाद हम पीछे देखते हैं और आगे देखते हैं इस नौ बरस के काम पर, काफी लम्बी-चौड़ी बातें हुई हैं, इस नौ बरस में काफी हिन्दुस्तान बना है, नया हिन्दुस्तान । काफी हमारी इज़्जत दुनिया में बढ़ी ।

अभी दो तीन हफ्ते हुए, महीना हुआ, दो तीन हफ्ते हुए मैं यहां वापस आया एक महीने भर का बाहर दौरा कर के, जहां गया मैंने देखा; दुनियां की आँखें हिन्दुस्तान की तरफ हैं । दिलचस्पी है उन्हें । देखते हैं किस तरह से हम रोज बढ़ रहे हैं, हमारी ताक़त बढ़ती है । हमारी इज़्जत बढ़ती जाती है । दुनियां की निगाहें इधर थीं । और मैं यहां वापस आया और देखा मैंने और काम करने हैं । पुरानी जो बातें हुई । लेकिन आखिर में हमारी आँखें, और निगाहें आगे हैं; भविष्य की तरफ हैं, मुस्तकबिल की तरफ हैं । आगे बढ़ना है । इस पांच बरस की योजना की तरफ बढ़ना है पक्की तौर से । और इसमें एक दूसरे की मदद करना है, पूरी ताक़त लगानी है । हम कुछ ताक़त जाया नहीं कर सकते आखिर में हम हिन्द गये हिन्दुस्तान को बनायें, ताकि हम आखिर में हिन्दुस्तान से गरीबी को निकालें, मुफलसी को निकालें, बेरोजगारी को निकालें या ऊंच-नीच जो है उसको कम करें

और एक खुशहाल मुल्क हो जो मिलकर रहे, अपने सहयोग से, और दुनिया की, और अमन की खिदमत करें । ये हमें करना है, मुश्किल बातें है । लेकिन मुश्किल बातें हमने की हैं, और फिर भी हम मुश्किल बातें करेंगे । इसलिए आज के दिन पीछे के तरफ देखें हम ज़रूरएक अपनी पुरानी और नयी संस्कृति के और उसको भूले नहीं, चाहे कित्ता ही हमको कोई बात बुरी लगे या अच्छी लगे । रास्ते से बहकें नहीं । ये सबक हम आज याद रक्खें, इसको दोहराएं ।

और याद है आपको कि इस साल जिसमें हम हैं, एक बड़ा, एक बड़ी बात की याद हमने की । ढाई हज़ार बरस हुए इस साल गौतम बुद्ध इस मुल्क में थे और इस मुल्क को उन्होंने पाक किया । गौतम बुद्ध ढाई हज़ार बरस हुए और ढाई हज़ार बरस बाद उनका नाम चमकता है, इस मुल्क में नहीं खाली बल्कि दुनिया में, क्योंकि जो बातें उन्होंने कहीं वो मज़बूत थीं, पक्की थीं, जो वक़्त से गुजरती नहीं हमेशा क़ायम रहती हैं ।

ग़रूर आता है सोच के कि इस हिन्दुस्तान की मिट्टी ने जिसने आपको मुझको पैदा किया, उसने, उसने ऐसे ऊंचे लोग जैसे महात्मा बुद्ध हैं, और गांधी जी हैं, उनको पैदा किया । आखिर इस मिट्टी में कोई बात है । कुछ, कुछ है, जिसने उसको इतने रोज़ तक क़ौम को ज़िन्दा रखा, मज़बूत किया । वो बातें नहीं हैं, ऊपर की झगड़े करने की । वो दिमाग की है, वो रूहानी बातें हैं । वो एक हिम्मत की हैं । वो हमारी पुरानी तहज़ीब और संस्कृति की हैं । तो फिर इन बातों को हम याद रखें और इन बड़े जो हमारे पेशवा हुए, गौतम बुद्ध और गांधी जी और और और जो हुए हैं बड़े आदमी, ज़रा उनकी याद करें, जिन्होंने इस मुल्क को बनाया । उनके रास्ते पर चलें, और कमर कर के जो अब हमें काम करने हैं सब मिलके उसको करें ।

जयहिन्द । मेरे साथ आप ज़रा तीन बार जयहिन्द कहिए जोर से ।

जयहिन्द ।